तत्त्वार्थसूत्र

प्रथम अध्याय

Presentation Developed by:

Smt Sarika Chhabra

www.JainKosh.org

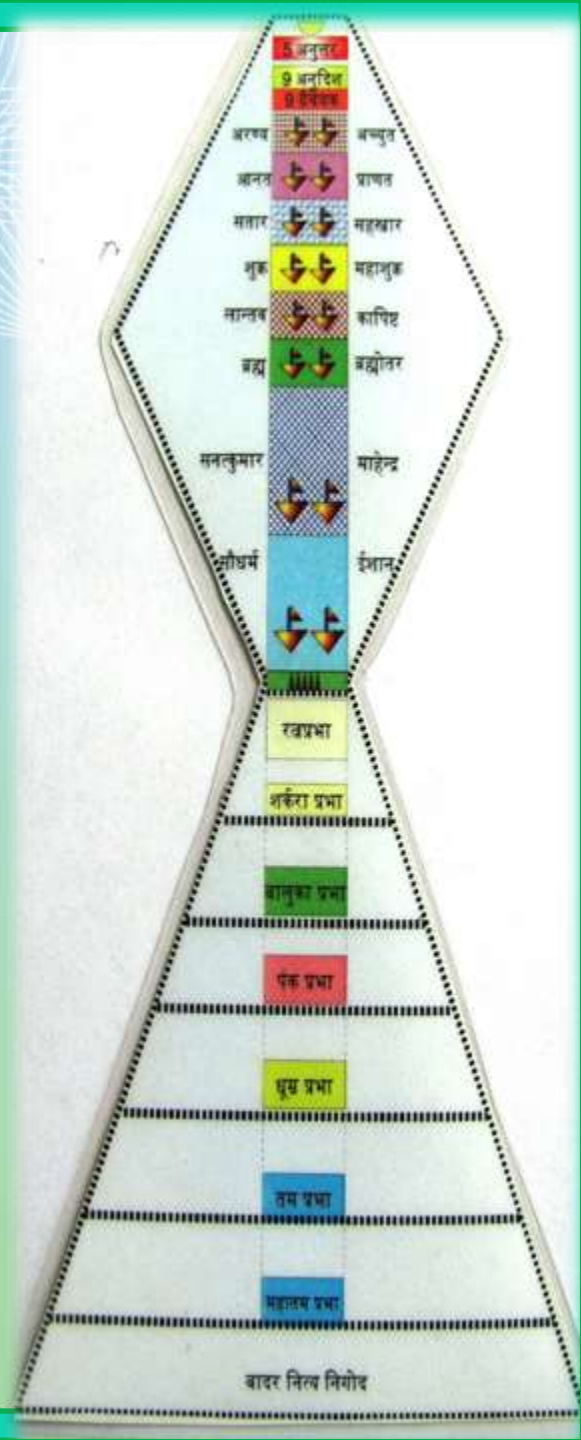

मंगलाचरण

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये।।

www.JainKosh.org

ग्रंथ प्रारंभ करने के पूर्व जानने योग्य 6 बातें:

ग्रंथ का नाम	• तत्त्वार्थसूत्र
ग्रंथ के रचयिता	• आचार्य उमास्वामी
मंगलाचरण में किसे नमस्कार किया गया है:	• अरहंत देव को
ग्रंथ का प्रमाण	• 10 अध्याय, 357 सूत्र
निमित्त	• भव्य जीवों के निमित्त
हेतु	• मोक्ष प्राप्ति हेतु

www.JainKosh.org

मंगलाचरण करने के कारण

- ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये
- शिष्टाचार के पालन के लिए
- नास्तिकता का परिहार के लिए
- पुण्य की प्राप्ति के लिये
- उपकार का स्मरण करने के लिये

www.JainKosh.org

सूत्र अर्थात् क्या?

- सूत्र = धागा , संकेत, साधक
- व्याकरण के अनुसार जो कम से कम शब्दों में पूर्ण अर्थ बता दे उसे सूत्र कहते हैं ।

www.JainKosh.org

तत्त्वार्थसूत्र अर्थात् 7 तत्त्व

1 - 4 अध्याय	• जीव तत्त्व
5 वाँ अध्याय	• अजीव तत्त्व
6 - 7 अध्याय	• आस्रव तत्त्व
8 वाँ अध्याय	• बंध तत्त्व
9 वाँ अध्याय	• संवर व निर्जरा तत्त्व
10 वाँ अध्याय	• मोक्ष तत्त्व

www.JainKosh.org

(भेत्तारं कर्मभूभृताम्)	(ज्ञातारं विश्वतत्त्वानाम्)	(मोक्षमार्गस्य नेतारम्)
कर्मरूपी पर्वतों क	सम्पूर्ण तत्त्वों को	मोक्षमार्ग क
भेदने वाले	जानने वाले	नेता
↓	↓	↓
वीतरागी	सर्वज्ञ	हितोपदेशी

को नमस्कार किया

उनक जैसे गुणों को प्राप्ति क लिए

मंगलाचरण की विशेषता

देवागम स्तोत्र	115 श्लोक	आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने (मंगलाचरण पर)
अष्टशती	800 श्लोक	भट्ट अकलंक देव द्वारा (देवागम स्तोत्र पर टीका)
अष्टसहस्री	8000 श्लोक	आचार्य विद्यानंदी द्वारा (अष्टशती पर टीका)

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।।1।।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र – ये तीनों मिलकर मोक्ष का मार्ग है।।1।।

www.JainKosh.org

मोक्षमार्ग क्या है?

www.JainKosh.org

सम्यक् अर्थात्

समञ्चति इति सम्यक्

यहाँ इसका अर्थ प्रशंसा है ।

www.JainKosh.org

गुण	स्वरूप
दर्शन	जिसके द्वारा देखा जाता है
ज्ञान	जिसके द्वारा जाना जाता है
चारित्र	जिसके द्वारा आचरण किया जाता है

www.JainKosh.org

शब्द	सम्यक् शब्द पहले रखने का कारण
दर्शन	पदार्थों के यथार्थ ज्ञानमूलक श्रद्धान का संग्रह करने के लिए
ज्ञान	संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय ज्ञानों का निराकरण करने के लिए
चारित्र	अज्ञानपूर्वक आचरण का निराकरण करने के लिए

www.JainKosh.org

मोक्षमार्ग क्या है ?

	सम्यग्दर्शन	सम्यग्ज्ञान	सम्यक्चारित्र
व्यवहार स्वरूप	सात तत्त्वों का सही श्रद्धान	सात तत्त्वों का सही ज्ञान	अशुभ से निवृत्ति, शुभ में प्रवृत्ति
निश्चय स्वरूप	परद्रव्यों से भिन्न आत्मा की रुचि	परद्रव्यों से भिन्न आत्मा का जानना	परद्रव्यों से भिन्न आत्मा में लीनता

www.JainKosh.org

इन तीनों के क्रम का कारण

दर्शन और ज्ञान साथ में उत्पन्न होने पर भी दर्शन पूज्य होने से पहले रखा है ।

चारित्र के पहले ज्ञान रखा है क्योंकि चारित्र ज्ञानपूर्वक होता है ।

www.JainKosh.org

तीनों की एकता

सूत्र में मार्गः शब्द एकवचन को बताने के लिए किया है ।

जिससे प्रत्येक में मोक्षमार्ग है इस बात का निराकरण हो जाता है ।
इससे 7 प्रकार के मिथ्यामार्ग का निषेध हो जाता है ।

ये तीनों से मिलकर मोक्षमार्ग होता है ।

www.JainKosh.org

तत्त्वार्थश्रद्धानम् सम्यग्दर्शनम्॥2॥

अपने-अपने स्वरूप के अनुसार पदार्थों का जो श्रद्धान होता ह, वह सम्यग्दर्शन है।।2।।

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन

तत्त्व + अर्थ + श्रद्धान

भाव + भाववान (पदार्थ) + प्रतीति

www.JainKosh.org

तत्त्व किसे कहते हैं?

तत् + त्व = वह + भाव

वस्तु का सच्चा स्वरूप

जो वस्तु जैसी है उसका जो भाव

www.JainKosh.org

अर्थ किसे कहते हैं?

- जो निश्चय किया जाता है

तत्त्वार्थ अर्थात्

- तत्त्व के द्वारा जो निश्चय किया जाता है वह तत्त्वार्थ है

तत्त्वार्थ का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है ।

www.JainKosh.org

दर्शन शब्द का अर्थ देखना होता है, श्रद्धान रूप अर्थ कैसे कर लिया ?

धातु के अनेक अर्थ होते हैं । यहाँ मोक्षमार्ग का प्रकरण होने से दर्शन शब्द का अर्थ श्रद्धान लिया है ।

www.JainKosh.org

मात्र अर्थ का श्रद्धान भी मोक्षमार्ग हो सकता है क्या ?

मात्र तत्त्व का श्रद्धान भी मोक्षमार्ग हो सकता है क्या ?

सर्व दोषों को दूर करने के हेतु तत्त्वार्थ कहा है ।

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन के लक्षण

1. सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का श्रद्धान
2. सात तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान
3. स्व-पर का श्रद्धान
4. स्वानुभव (आत्म-अनुभव)

सम्यग्दर्शन का स्वरूप 4 अनुयोगों में

प्रथमानुयोग,चरणानुयोग के अनुसार	करणानुयोग के अनुसार	द्रव्यानुयोग के अनुसार
सच्चे देव, शास्त्र गुरु का श्रद्धान, 25 दोषों से रहित, 8 अंग सहित	दर्शन मोहनीय व अनंतानुबंधी के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से आत्मा की निर्मल परिणति	सात तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन

- सराग — प्रशम, संवेग आदि लक्षण वाला
- वीतराग — आत्म-विशुद्धि मात्र

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व के गुण

1. प्रशम

2. संवेग

3. अनुकम्पा

4. आस्तिक्य

Created By श्रीमति सारिका विकास छाबड़ा
www.jainkosh.org

प्रशम	• रागादि की मंदता होना
संवेग	• संसार से भीतिरूप परिणाम होना
अनुकम्पा	• सब जीवों में दया भाव रखकर प्रवृत्ति करना
आस्तिक्य	• 'जीवादि पदार्थ सत्-स्वरूप हैं', 'संसार–मोक्ष, पुण्य–पाप आदि का अस्तित्व है' – ऐसी बुद्धि का होना

www.JainKosh.org

तन्निसर्गादधिगमाद्वा।।3।।

वह (सम्यग्दर्शन) निसर्ग से और अधिगम से उत्पन्न होता है।।3।।

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन को उत्पत्ति क हेतु

निसर्गज

✻ स्वभाव से

✻ काँट को नोंक

(काँट को नोक स्वाभाविक होती है

अधिगमज

✻ पर क उपदेश से

✻ बाण को धार

(बाण को धार को बनाने क लिए कि सी को आवश्यकता होती है)

www.JainKo

जो सम्यग्दर्शन वर्तमान में

बिना उपदेश के होता है

उपदेश पूर्वक होता है

उसे निसर्गज सम्यग्दर्शन कहते हैं

उसे अधिगमज सम्यग्दर्शन कहते हैं

www.JainKosh.org

बहिरंग कारण

निसर्गज सम्यग्दर्शन	अधिगमज सम्यग्दर्शन
☸जाति-स्मरण	☸धर्म श्रवण
☸जिन बिंब दर्शन	
☸जिन कल्याणक दर्शन	
☸वेदना से	

www.JainKosh.org

अन्तरंग कारण

दर्शन मोहनीय व अनन्तानुबन्धी कर्म का

- क्षय
- क्षयोपशम
- उपशम

www.JainKosh.org

क्या ऐसा हो सकता है कि जीव ने कभी भी उपदेश नहीं सुना हो और उसे सम्यग्दर्शन हो जायें?

नहीं

www.JainKosh.org

जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम्।।4।।

जीव, अजीव,आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष — ये तत्त्व हैं।।4।।

www.JainKosh.org

7 तत्त्व

जीव

अजीव

आस्रव

बंध

संवर

निर्जरा

मोक्ष

www.JainKosh.org

जीव तत्त्व

ज्ञान-दर्शन स्वभावी आत्मा को जीव तत्त्व कहते हैं

वह चेतन तत्त्व आत्मा ही मैं हूँ

www.JainKosh.org

जीव तत्त्व कौन?

स्वयं का जीव

www.JainKosh.org

जीव तत्त्व है कि अजीव तत्त्व?

अलमारी	मेरा आत्मा	मेरे कर्म	गुलाब जामुन
टी. वी	कम्प्युटर	सहेली	बच्चे
पति	पति की आत्मा	मेरे वचन	मेरी आंखें

www.JainKosh.org

अजीव तत्त्व

ज्ञान-दर्शन
स्वभाव से रहित

तथा आत्मा से
भिन्न समस्त
पुद्गलादि पाँच
द्रव्य

www.JainKosh.org

आस्रव आदि तत्त्वों के प्रकार

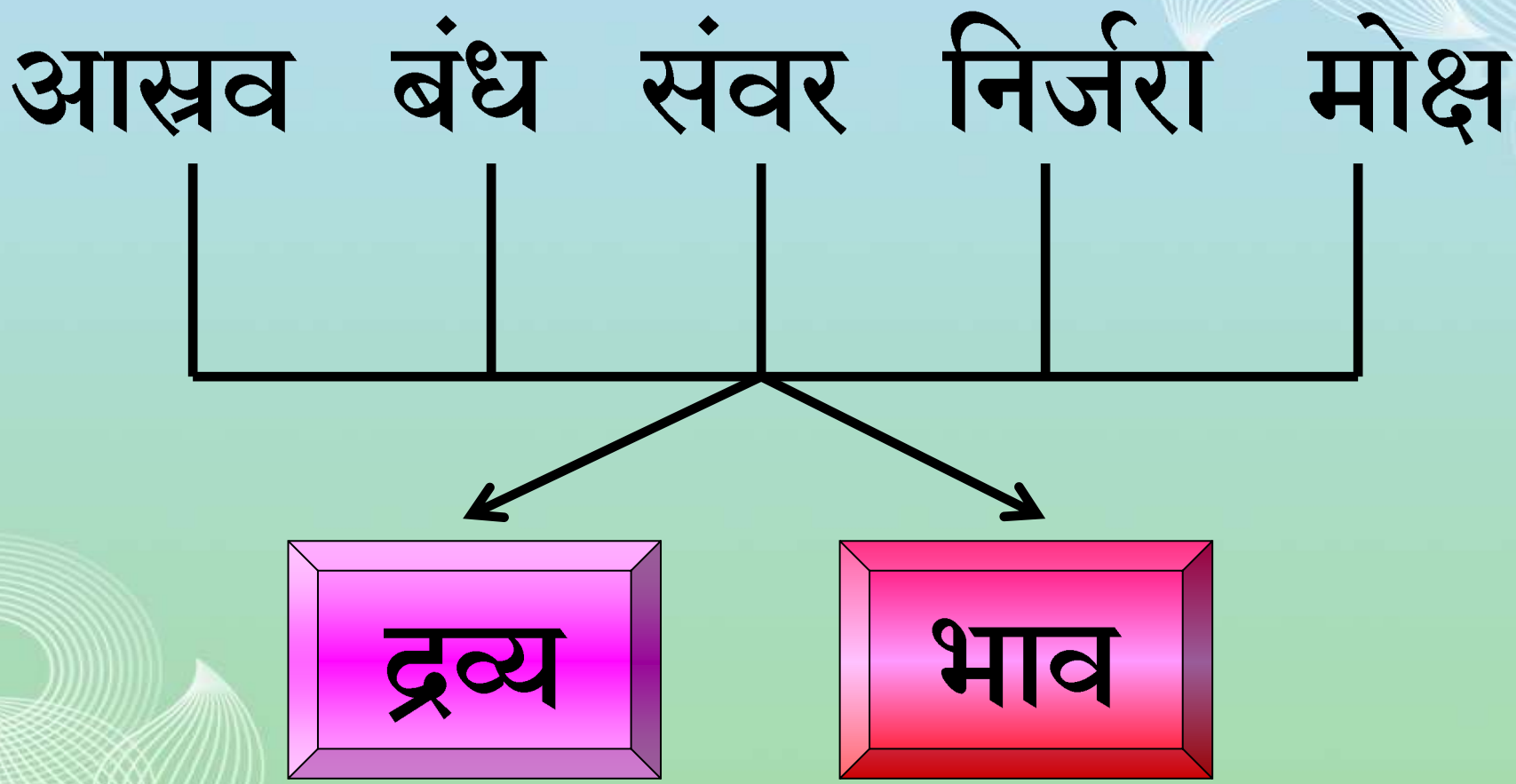

www.JainKosh.org

द्रव्य तत्त्व

कर्मों
- का आना - आस्रव
- का आत्मा से संबंध होना - बन्ध
- का आना रुकना - संवर
- का एकदेश खिरना - निर्जरा
- का सम्पूर्ण नाश - मोक्ष

www.JainKosh.org

भाव तत्त्व

शुभ-अशुभ भावों
- की उत्पत्ति - आस्रव
- का बने रहना - बन्ध

शुद्ध भावों की
- उत्पत्ति - संवर
- वृद्धि - निर्जरा
- पूर्णता - मोक्ष

www.JainKosh.org

इनमें पुण्य–पाप का ग्रहण क्यों नहीं किया ?

क्योंकि आस्रव – बंध में उनका अंतर्भाव हो जाता है ।

www.JainKosh.org

आस्रव

भावास्रव

जिन मोह राग द्वेष भावों के निमित्त से ज्ञानावरणादि कर्म आते हैं, उन मोह राग द्वेष **भावों** को भावास्रव कहते है

द्रव्यास्रव

भावास्रव के निमित्त से ज्ञानावरणादि **कर्मों का स्वयं** आना द्रव्यास्रव है

www.JainKosh.org

कर्मों का आना

आस्रव का स्वरूप

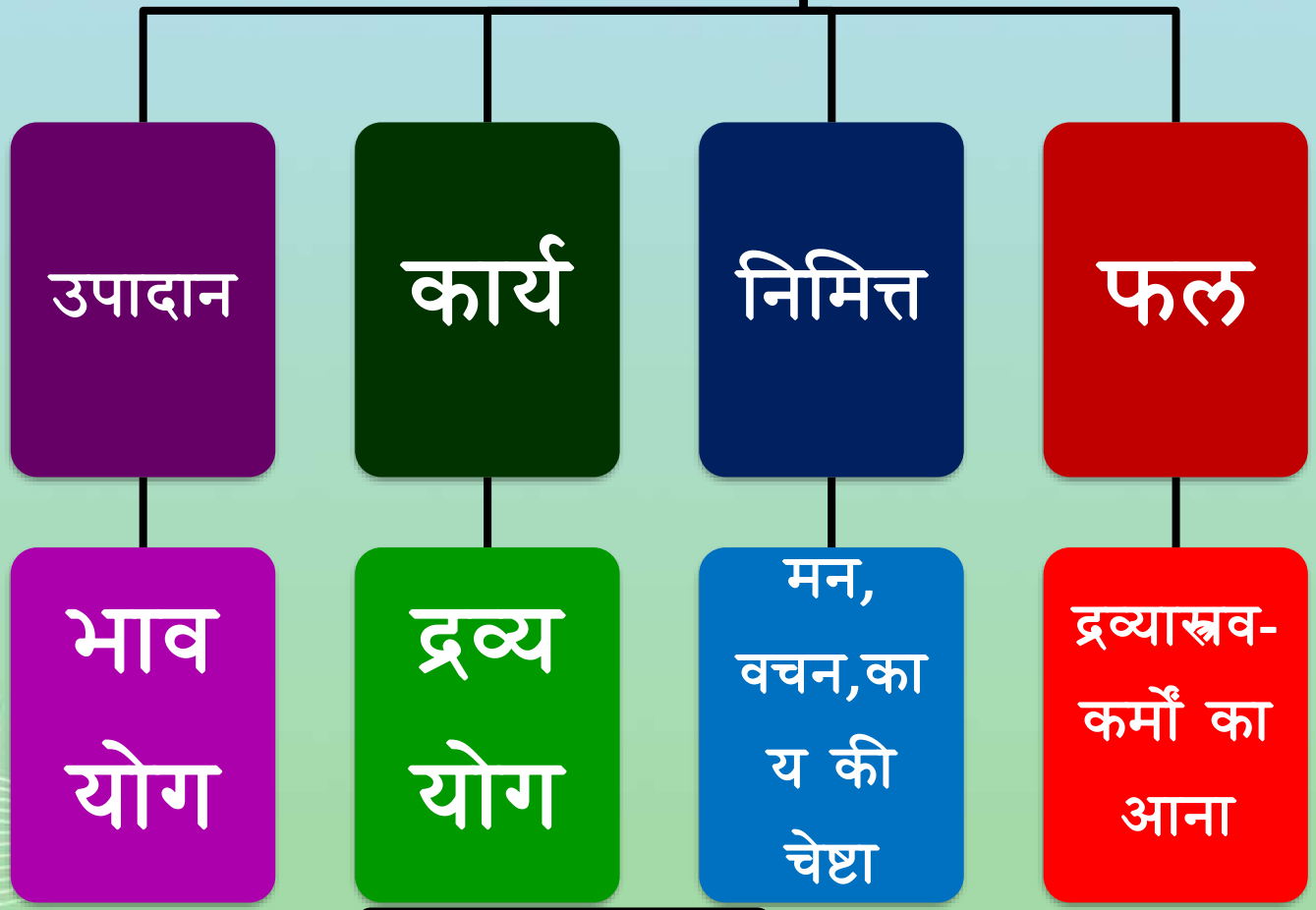

www.JainKosh.org

बंध

भाव बंध

आत्मा के जिन परिणामों के निमित्त से कर्म आत्मा से संबंधरूप हो जाते हैं, उन मोह-राग-द्वेष, पुण्य-पाप आदि विभाव भावों को भाव बंध कहते हैं

द्रव्य बंध

उसके निमित्त से पुद्गल का स्वयं कर्मरूप बंधना द्रव्य बंध है

www.JainKosh.org

रागपरिणाम मात्र ऐसा जो भावबन्ध है,

वह द्रव्यबन्ध का कारण होने से वही निश्चयबन्ध है एवं छोड़ने योग्य है ।

www.JainKosh.org

संवर

आत्मा के जिन परिणामों के निमित्त से नवीन कर्म आना रुकते हैं, उन परिणामों को भावसंवर कहते हैं

तदनुसार नवीन कर्मों का आना स्वयं स्वतः रुक जाना द्रव्यसंवर है ।

www.JainKosh.org

निर्जरा

आत्मा के जिन परिणामों के निमित्त से बंधे हुए कर्म एकदेश खिरते हैं, उन परिणामों को भावनिर्जरा कहते हैं

आत्मा से कर्मों का एकदेश छूट जाना द्रव्य-निर्जरा है ।

www.JainKosh.org

मोक्ष

भाव मोक्ष

अशुद्ध दशा का सर्वथा सम्पूर्ण नाश होकर आत्मा की पूर्ण निर्मल पवित्र दशा का प्रकट होना भाव-मोक्ष है

द्रव्य मोक्ष

निमित्त कारण द्रव्यकर्म का सर्वथा नाश (अभाव) होना सो द्रव्यमोक्ष है।

www.JainKosh.org

तत्त्व 7 ही क्यों?

- उक्त सात के यथार्थ श्रद्धान बिना मोक्षमार्ग नहीं बन सकता है
- जीव और अजीव को जाने बिना अपने-पराये का भेद-विज्ञान कैसे हो ? जिसे सुखी करना है ऐसे जीव को जानना, जिसके साथ सुखी होने का भ्रम हो सकता है ऐसे अजीव को जानना
- मोक्ष को पहिचाने बिना और हितरूप माने बिना उसका उपाय कैसे करे ?
- मोक्ष का उपाय संवर-निर्जरा हैं, अत: उनका जानना भी आवश्यक है ।
- तथा आस्रव का अभाव सो संवर है और बंध का एकदेश अभाव सो निर्जरा है; अत: इनको जाने बिना इनको छोड़ संवर-निर्जरारूप कैसे प्रवर्त्ते ?

www.JainKosh.org

7 तत्त्वों के क्रम का कारण

- सब फल जीव को है, अतः सर्वप्रथम जीव कहा।
- जीव का उपकारी अजीव है, अतः अजीव कहा।
- आस्रव, जीव और अजीव दोनों को विषय करता है, अतः आस्रव कहा।
- बंध आस्रव-पूर्वक होता है अतः बंध कहा।
- संवृत जीव के आस्रव-बंध नहीं होता है, अतः संवर कहा ।
- संवर के होने पर निर्जरा होती है, अतः निर्जरा कही।
- पूर्ण निर्जरा होने पर मोक्ष होता है, अतः अंत में मोक्ष कहा ।

www.JainKosh.org

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।5।।

नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव रूप से उनका अर्थात् सम्यग्दर्शन आदि और जीव आदि का न्यास अर्थात् निक्षेप होता है।।5।।

www.JainKosh.org

निक्षेप

- लोक अथवा आगम में शब्द व्यवहार करने की पद्धति

- प्रयोजन
  - अप्रकृत का निराकरण करने के लिये
  - प्रकृत का प्ररूपण करने के लिये

www.JainKosh.org

निक्षेप (लोक अथवा आगम में शब्द व्यवहार करने की पद्धति)

नाम	स्थापना	द्रव्य	भाव
जिस पदार्थ में जो गुण नहीं, उसको उस नाम से कहना	''वह यह है'' इस प्रकार बुद्धि से अभेद करना	जो गुणों को प्राप्त हुआ था अथवा गुणों को प्राप्त होगा	वर्तमान पर्याय संयुक्त वस्तु

www.JainKosh.org

निक्षेप - उदाहरण

नाम	स्थापना	द्रव्य	भाव
वीरता न होने पर भी महावीर नाम रखना	महावीर को प्रतिमा को महावीर कहना	राजकुमार वद्धमान को 'महावीर भगवान' कहना	अनंत चतुष्टय युक्त को 'भगवान महावीर' कहना

स्थापना

तदाकार

उसी रूप, आकृति वाले पदार्थ में "यह वही है" ऐसी स्थापना करना

अतदाकार

भिन्न रूप, आकृति वाले पदार्थ में "यह वही है" ऐसी स्थापना करना

www.JainKosh.org

जीव के 4 निक्षेप

नाम जीव	• जीवन गुण की अपेक्षा न रखकर किसी का नाम मात्र जीव रखना
स्थापना जीव	• अक्ष आदि में 'यह जीव है' ऐसा स्थापित करना
द्रव्य जीव	• जीवन सामान्य की अपेक्षा यह नहीं बनता परन्तु मनुष्य आदि जीव की अपेक्षा यह बन जाता है
भाव जीव	• जीवन पर्याय से सहित आत्मा भाव जीव है

www.JainKosh.org

इसी प्रकार अजीव आदि 7 तत्त्व पर लगाना

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र पर लगाना

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन के 4 निक्षेप

नाम सम्यग्दर्शन	• सम्यग्दर्शन गुण की अपेक्षा न रखकर किसी का नाम सम्यग्दर्शन रखना
स्थापना सम्यग्दर्शन	• अक्ष आदि में 'यह सम्यग्दर्शन है' ऐसा स्थापित करना
द्रव्य सम्यग्दर्शन	• जिसे वर्तमान में सम्यग्दर्शन नहीं है, परन्तु भविष्य में होगा उस जीव को द्रव्य सम्यग्दर्शन कहते हैं
भाव सम्यग्दर्शन	• तत्त्वार्थ श्रद्धान पर्याय से परिणत श्रद्धा गुण (या आत्मा) भाव सम्यग्दर्शन है

www.JainKosh.org

प्रमाणनयैरधिगमः।।6।।

प्रमाण और नयों से पदार्थों का ज्ञान होता है।।6।।

www.JainKosh.org

पदार्थों को जानने के उपाय

प्रमाण

सच्चा ज्ञान

पदार्थ के सर्वदेश को ग्रहण करता है

नय

श्रुतज्ञान का अंश

वस्तु के एकदेश ग्रहण करता है

www.JainKosh.org

प्रमाण

जो जानता है	कर्तृ साधन
जिसके द्वारा जाना जाता है	करण साधन
जानन मात्र	भाव साधन

उसे प्रमाण कहते हैं

अर्थात् ज्ञान ही प्रमाण है

इन्द्रियाँ, इन्द्रियों का व्यापार, सन्निकर्ष, प्रकाश-पुस्तक आदि प्रमाण नहीं हैं ।

www.JainKosh.org

सम्यक् जानना अर्थात संशय विपर्यय अनध्यवसाय रहित जानना

संशय

- विरुद्ध अनेक कोटि को स्पर्श करने वाले ज्ञान को संशय कहते हैं ।

विपर्यय

- वस्तु के विरुद्ध ज्ञान को विपर्यय कहते हैं ।

अनध्यवसाय

- 'कुछ है' – इस प्रकार के ज्ञान सहित जानने की जिज्ञासा का अभाव अनध्यवसाय है ।

www.JainKosh.org

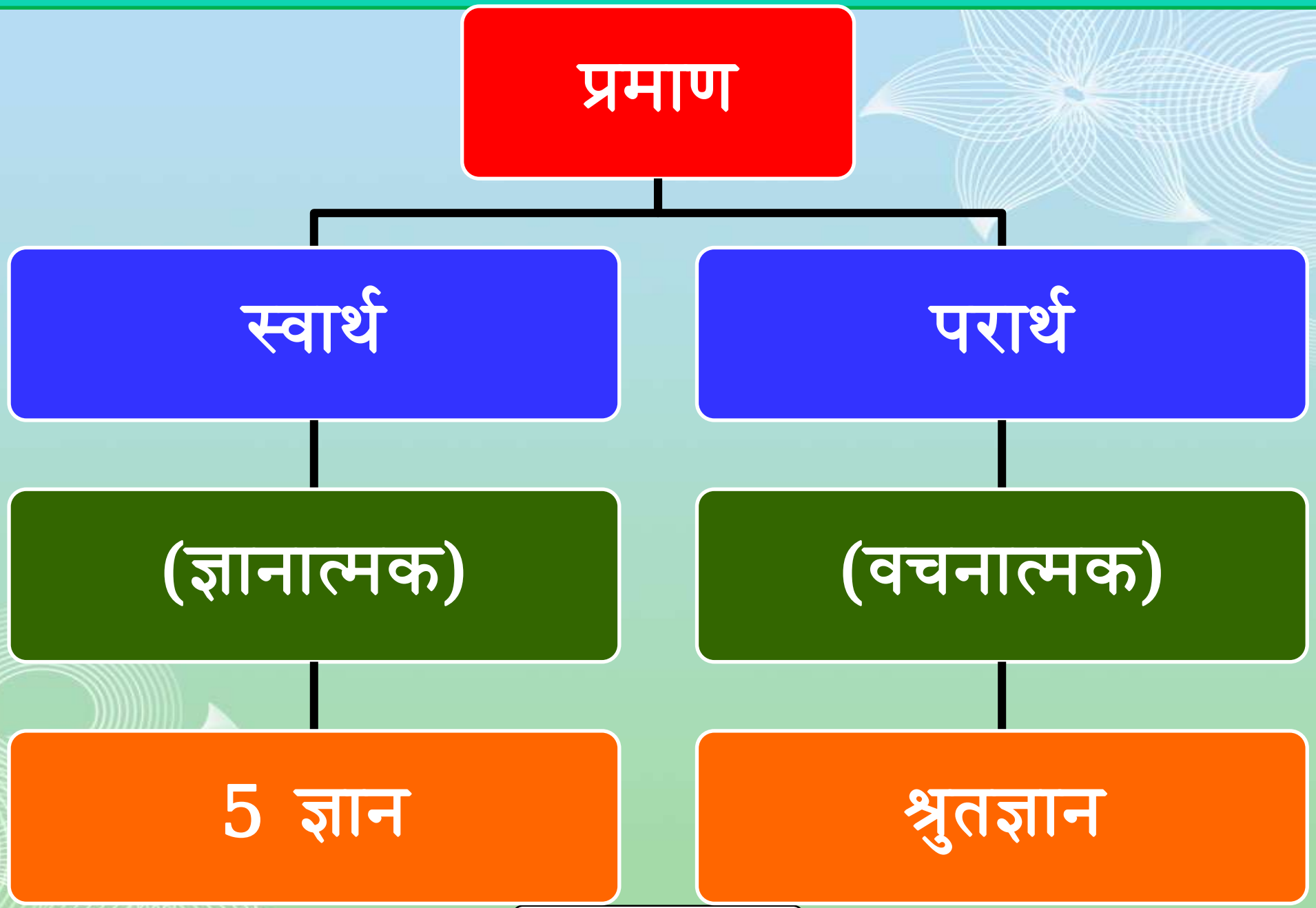

www.JainKosh.org

प्रमाण का विषय

- वस्तु सामान्य - विशेषात्मक है।
  - अर्थात् द्रव्य-पर्याय स्वरूपी पदार्थ है।

- जिसमें सामान्य – विशेष दोनों ही अंशों का युगपत ज्ञान होता हो
- वह प्रमाण ज्ञान है ।

www.JainKosh.org

नय

वस्तु को प्रमाण से जानकर

किसी एक अवस्था द्वारा

पदार्थ का निश्चय करना

नय है ।

www.JainKosh.org

नय का विषय

- वस्तु सामान्य - विशेषात्मक है।
  - अर्थात् द्रव्य-पर्याय स्वरूपी पदार्थ है।

- जिसमें वस्तु के
- सामान्य का अथवा विशेष अंश का
- ज्ञान होता हो
- वह नय ज्ञान है ।

www.JainKosh.org

सापेक्ष नय ही सम्यक होते हैं ।

निरपेक्ष नय दुर्नय होते हैं ।

www.JainKosh.org

नय किसमें लगते हैं?

- ज्ञान में
- वाणी में

www.JainKosh.org

नय किसमें नहीं लगते हैं?

- वस्तु में
- क्रिया में

www.JainKosh.org

जैन दर्शन में ही नय का व्याख्यान है ।

अन्य दर्शनों में मात्र प्रमाण की चर्चा है ।

www.JainKosh.org

प्र.- नय को पहले रखना चाहिए था क्योंकि उसमें कम अक्षर हैं?

उ.- प्रमाण श्रेष्ठ है, अतः पहले रखा है ।

प्र.- प्रमाण श्रेष्ठ क्यों है?

उ.- क्योंकि प्रमाण से ही नय की उत्पत्ति होती है ।

www.JainKosh.org

प्रमाण-नय के द्वारा क्या जानना है?

सम्यग्दर्शन - ज्ञान - चारित्र एवं

जीवादि 7 तत्त्व

www.JainKosh.org

प्रमाण द्वारा रत्नत्रय

निज शुद्धात्मरूचि / तत्त्वार्थ श्रद्धान से परिणत आत्मा सम्यग्दर्शन है ।

समीचीन ज्ञान से परिणत आत्मा सम्यग्ज्ञान है ।

निश्चल निजात्म परिणति से परिणत आत्मा सम्यग्चारित्र है ।

www.JainKosh.org

नय द्वारा सम्यग्दर्शन

कर्म की अपेक्षा दर्शन मोह के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से होने वाला भाव सम्यग्दर्शन है ।

व्यवहार नय से देव – शास्त्र – गुरु का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है ।

www.JainKosh.org

प्रमाण द्वारा जीव तत्त्व

जीव पदार्थ ज्ञान दर्शन स्वभावी है एवं मति ज्ञान आदि उसकी अवस्था है ।

जीव नित्य और अनित्य है

जीव अनंत धर्मात्मक पदार्थ है

www.JainKosh.org

नय द्वारा जीव

स्वभाव की अपेक्षा नित्य है ।

जीव पर्याय की अपेक्षा अनित्य है ।

ऐसे ही अजीव, आस्रव आदि तत्त्व को भी जानना

www.JainKosh.org

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।7।।

निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान से सम्यग्दर्शन आदि विषयों का ज्ञान होता है।।7।।

www.JainKosh.org

मध्यम रुचि शिष्यों क लिए -

पदार्थों को जानने के उपाय

निर्देश	स्वामी	साधन	अधिकरण	स्थिति	विधान
स्वरूप	मालिक	उत्पत्ति का कारण	आधार	काल	भेद

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन क्या है?

निर्देश

जीवादि पदार्थों का
श्रद्धान सम्यग्दर्शन है ।

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन किसके होता है ?

स्वामित्व

सामान्य अपेक्षा

- जीव को होता है

विशेष अपेक्षा

- नारकी, तिर्यंच आदि गतियों में होता है ।

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन का साधन (कारण) क्या है ?

साधन

बाह्य					अभ्यंतर		
धर्म श्रवण	जाति स्मरण	जिनबिंब दर्शन	वेदना	देव ऋद्धि दर्शन	दर्शन मोहनीय का क्षय	उपशम	क्षयोपशम

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन का अधिकरण (आधार) क्या है ?

अधिकरण

बाह्य	अंतरंग
लोक का क्षेत्र जहां सम्यग्दर्शन पाया जाता है	जिस पदार्थ में सम्यग्दर्शन पाया जाता है
लोक नाली	जीव स्वयं

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन की स्थिति कितनी है याने कितने काल तक रहता है ?

स्थिति

जघन्य अंतर्मुहूर्त

औपशमिक सम्यक्त्व की अपेक्षा

उत्कृष्ट

संसारी को

66 सागर

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व अपेक्षा

मुक्त को

सादि-अनंत

क्षायिक सम्यक्त्व

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन के कितने भेद हैं ?

विधान

सामान्य से - 1

निसर्गज और अधिगमज अपेक्षा - 2

औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक की अपेक्षा - 3

शब्दों की अपेक्षा - संख्यात

श्रद्धान करने वालों की अपेक्षा - असंख्यात

श्रद्धेय पदार्थों की अपेक्षा - अनंत प्रकार हैं

www.JainKosh.org

इसी प्रकार सम्यग्ज्ञान-चारित्र एवं जीव आदि तत्त्वों पर भी लगाना चाहिए ।

www.JainKosh.org

उदाहरण – सम्यग्दर्शन का निर्देश आदि

निर्देश	• जीवादि पदार्थों का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है
स्वामी	• सामान्य से जीव , विशेष से गति आदि में
साधन	• बाह्य- दर्शन मोहनीय कर्म का क्षय, उपशम या क्षयोपशम आदि • अभ्यंतर- जातिस्मरण आदि
अधिकरण	• बाह्य- 14 राजु लम्बी त्रस नाड़ी • अभ्यंतर- सम्यग्दर्शन का जो स्वामी है
स्थिति	• जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट स्थिति सादि अनन्त है
विधान	• सम्यग्दर्शन 1, 2, 3, संख्यात, असंख्यात एवं अनन्त प्रकार का होता है

www.JainKosh.org

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च।।४।।

सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व से भी सम्यग्दर्शन आदि विषयों का ज्ञान होता है।।४।।

www.JainKosh.org

विस्तार रुचि शिष्यों के लिये

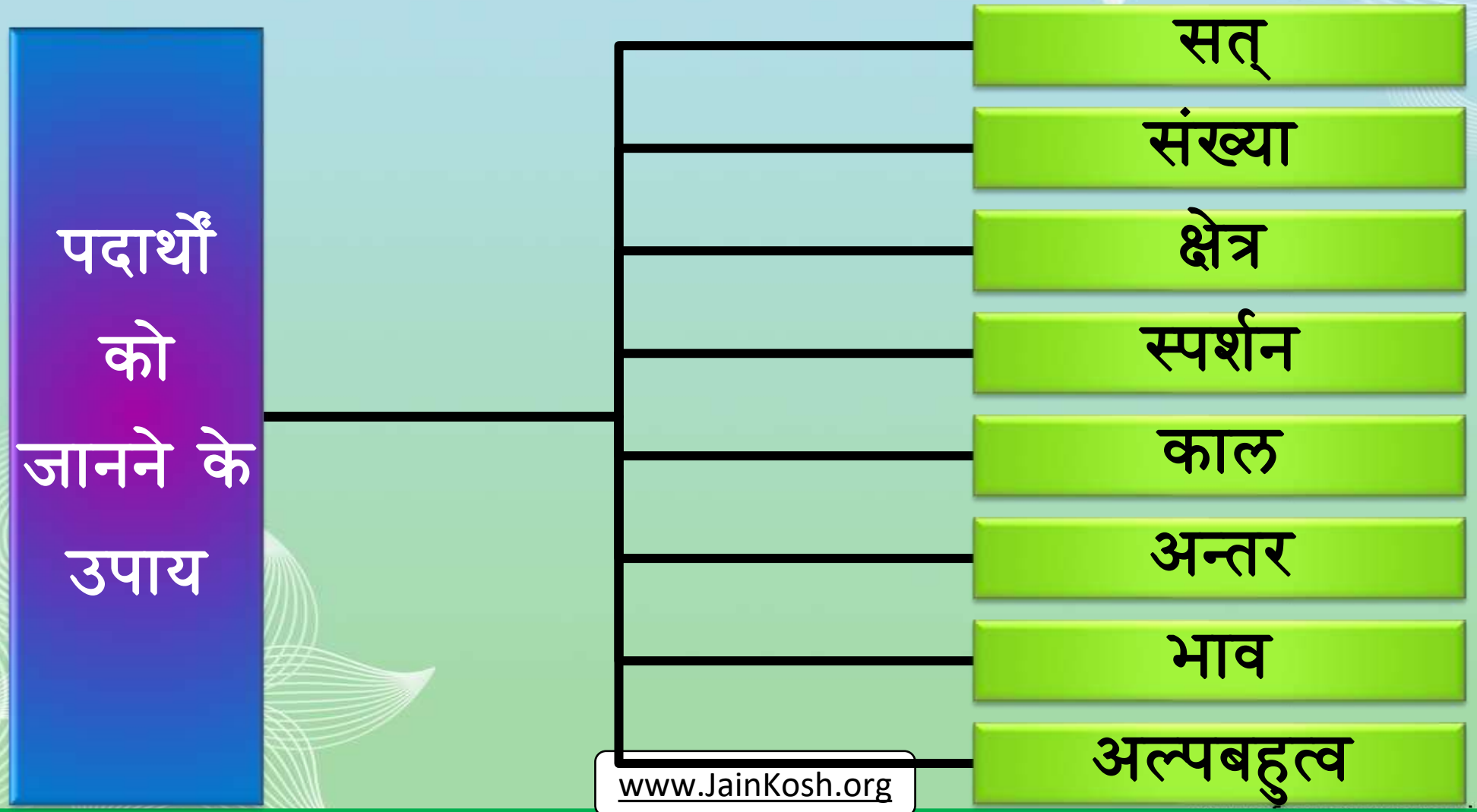

www.JainKosh.org

सत् क्या है?

सत् अर्थात अस्तित्व,

जैसे जीव का existance

जैसे - जीव है, पुद्गल है ।

www.JainKosh.org

संख्या

द्रव्य का प्रमाण, quantity

जैसे जीव - अनंत, पुद्गल - अनंतानत

www.JainKosh.org

विधान और संख्या में क्या अंतर है?

- विधान के द्वारा प्रकारों की गिनती की जाती है और संख्या के द्वारा पदार्थों की गिनती की जाती है ।

www.JainKosh.org

क्षेत्र

पदार्थ के वर्तमान काल का निवास-स्थान क्षेत्र कहलाता है

जैसे – मिथ्यादृष्टि जीव का क्षेत्र – 3 लोक,

नारकी – लोक का असंख्यातवा भाग

www.JainKosh.org

स्पर्शन

तीन काल में वस्तु ने कितने क्षेत्र को स्पर्श किया है वह स्थान स्पर्शन कहलाता है ।

जैसे – मिथ्यादृष्टि – तीन लोक, नारकी – लोक का असंख्यातवा भाग

www.JainKosh.org

क्षेत्र और स्पर्शन में क्या अंतर है?

क्षेत्र	स्पर्शन
❁ इसमें पदार्थ के वर्तमान क्षेत्र के स्पर्शन का अभिप्राय है ।	❁ इसमे त्रिकालगोचर अर्थात् अतीत, अनागत क्षेत्र के स्पर्शन का अभिप्राय है ।
❁ जैसे – वर्तमान जल के द्वारा वर्तमान घट के क्षेत्र का स्पर्शन होता है ।	❁ जैसे – जल का त्रिकाल गोचर क्षेत्र – तीन लोक

www.JainKosh.org

काल

किसी क्षेत्र में स्थित वस्तु के समय की मर्यादा का निश्चय करना काल है

जैसे – सामान्य से - मिथ्यादृष्टि जीव का काल – सब काल (नाना जीव अपेक्षा)

विशेष से - नरक में मिथ्यादृष्टि का काल (एक जीव अपेक्षा)

जघन्य – अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट 1, 3, 7, 10, 17, 22, 33 सागर

www.JainKosh.org

अंतर

जब विवक्षित गुण गुणान्तररूप से संक्रमित हो जाता है और पुनः उसकी प्राप्ति हो जाती है तो मध्य के काल को विरह काल कहते हैं ।

जैसे – सामान्य से - मिथ्यादृष्टि जीव का अंतर – नहीं है (नाना जीव अपेक्षा),

विशेष से - नरक में मिथ्यादृष्टि का अंतर (एक जीव अपेक्षा)

जघन्य – अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट – कुछ कम – (1, 3, 7, 10, 17, 22, 33 सागर)

www.JainKosh.org

भाव

औपशमिकादि परिणामों को भाव कहते हैं ।

जैसे मिथ्यादर्शन यह औदयिक भाव है, सम्यग्दर्शन यह औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक भाव है

www.JainKosh.org

अल्पबहुत्व

एक दूसरे की अपेक्षा न्यूनाधिक का ज्ञान करने को अल्पबहुत्व कहते हैं

जैसे – तिर्यंच सबसे ज्यादा, सिद्ध, देव, नारकी और मनुष्य सबसे कम

www.JainKosh.org

सत्	अस्तित्व
संख्या	गिनती
क्षेत्र	वर्तमान निवास
स्पर्शन	तीन कालों में विचरण क्षेत्र
काल	अवधि
अतर	विरह काल
भाव	परिणाम
अल्पबहुत्व	कम- ज्यादा को तुलना करना

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - Smt. Sarika Jain sarikam.j@gmail.com
  - ☎:94066-82889
  - www.Jainkosh.org